अध्याय 4

हमारे आस-पास के बाज़ार

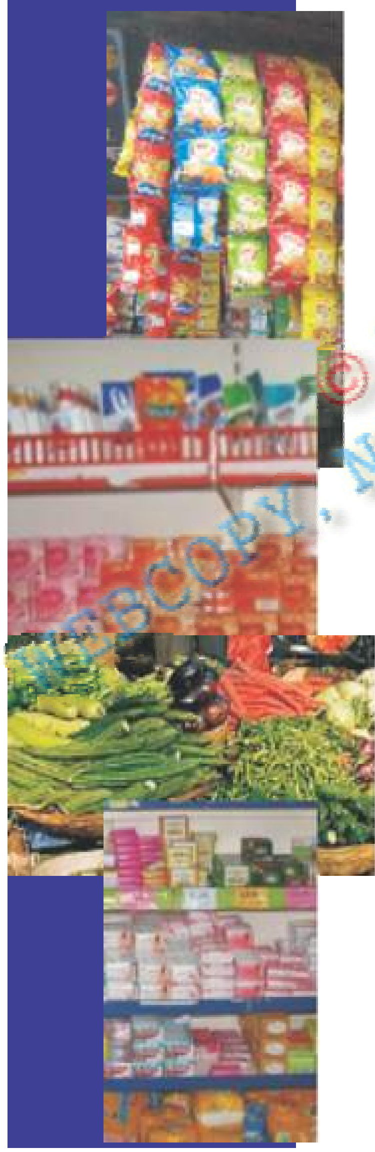

पहेली बूझो

1. वे घर-घर जाते हैं
   आवाज़ें भी खूब लगाते हैं
   ले लो, ले लो, कुछ तो ले लो
   कौन हैं वो, तुम जल्दी बता लो।

2. एक जगह पर रहती हूँ
   चीज़ें बहुत सी रखती हूँ
   पैसे दे दो, चीज़ें ले लो
   कौन हूँ मैं, यह तो बोलो।

3. दोपहर को मैं आती हूँ
   शाम चली जाती हूँ
   निकल सको तो मिल जा आज
   नहीं तो मिलेंगे सात दिन बाद।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

क्या तुम इन पहेलियों को हल कर पाए?

जब हम लोग आस-पास की जगहों पर नजर दौड़ाते हैं तो बाज़ार दिखता है। बाज़ार में दुकानें दिखाई पड़ती हैं। इन दुकानों में तरह-तरह के सामान होते हैं, जैसे कि कपड़े, चावल, लिट्टी-चोखा, चाय-पकौड़ा, गुंजा, सब्जी, साबुन, मंजन, मसाले, कॉपी, किताब, अखबार, टी. वी., मोबाइल आदि रहते हैं। यदि हम लोग बाज़ार में मिलने वाले सामानों की सूची बनाएँ तो यह सूची बहुत बड़ी होगी।

हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाज़ार जाते हैं। बाज़ार के कई रूप हैं। हम सामानों के लिए नजदीक की दुकान, साप्ताहिक बाज़ार, बड़ी दुकान तथा शॉपिंग कॉम्पलेक्स में जाते हैं।

इस पाठ में हम बाज़ार को जानने का प्रयास करेंगे, बाज़ार किस किस तरह के होते हैं? वस्तुएँ कैसे ख़रीदी एवं बेची जाती हैं? ख़रीददार तथा बेचने वाले कौन हैं? इनकी समस्याएँ क्या-क्या हो सकती हैं ?

गाँव की दुकान

एक छोटे से गाँव सालहरा में रामजी का परिवार खेती के साथ-साथ दुकान भी चलाता है। वह खैनी, माचिस, नमक, गुड़, चाय, चीनी, टॉफियाँ, तेल आदि किराने का सामान बेचता है। गाँव में ऐसी तीन-चार दुकानें हैं।

एक दिन सुबह रामजी की दुकान खुलते ही एक लड़की आई और बोली, "मुझे दस रुपये की चाय दे दो"। फिर दो लोग आए और उन्होंने बीड़ी और माचिस ख़रीदी। कुछ देर बाद एक लड़का आया और पैसा बाद में देने की बात कहकर एक पाव तेल उधार ले गया। रामजी गाँव के सभी लोगों को पहचानता है। इसलिए बहुत से लोगों को वह सामान उधार भी देता है। एक वृद्ध महिला चावल दे कर चीनी ले गई। रामजी के दुकान में राशन के बदले सामान भी मिलता है। अपनी छोटी-छोटी ज़रूरतों के लिए यहाँ के लोग रामजी की दुकान पर निर्भर हैं। कोई चीज़ की कभी अचानक ज़रूरत पड़ी तो वे रामजी की दुकान से ले लेते हैं।

1. रामजी की दुकान से लोग किन-किन कारणों से सामान ख़रीदते हैं?
2. किराने के सामान के लिए जलहरा के कुछ लोग ही रामजी की दुकान पर बार-बार आते हैं। ऐसा क्यों?
3. बहुत कम मात्रा में सामान ख़रीदने पर महँगा मिलता है। उदाहरण देते हुए अपना मत रखिए।

बड़े गाँव का बाज़ार

क्या जलहरा के लोगों के पास सामान ख़रीदने के लिए यही एक जगह है? क्या आस-पास कोई बाज़ार नहीं है? ऐसा तो नहीं होगा। जलहरा के आस-पास कई गाँव हैं जहाँ रामजी की दुकान जैसी कई दुकानें हैं

पास में एक बड़ा गाँव तियरा है। यहाँ लगभग 500 घर हैं तियरा गाँव में बाज़ार है। यहाँ 15 20 दुकानें हैं जिसमें 7 8 किराने की दुकानें हैं इसके अलावा कपड़े, साइकिल मरम्मत, मिठाई, सब्ज़ी फल, चाय नाश्ता तथा दूध की दुकानें है। ठेले पर भुजा, छोले, गोलगप्पा आदि मिलते हैं। इस बाज़ार में सामान ख़रीदने तियरा के अलावा आस-पास के गाँवों के लोग आते हैं। इस बाज़ार में सामान की अच्छी बिक्री होती है। यहाँ भी दुकानदार कई लोगों को सामान उधार देते है।

1. जलहरा की दुकान और तियरा के बाज़ार में क्या अंतर है?
2. आस-पास के गाँवों के लोग किन कारणों से तियरा के बाज़ार आते हैं?
3. उधार लेना कभी तो मजबूरी है, तो कभी सुविधा। उदाहरण देकर समझाओ।

साप्ताहिक बाज़ार या हाट

साप्ताहिक बाज़ार सप्ताह के एक निश्चित दिन और जगह पर लगने वाला बाजार है। दुकानदार वहाँ दोपहर को दुकान लगाते हैं और शाम को समेट लेते हैं। अगले दिन वह अपनी दुकान किसी दूसरे साप्ताहिक बाज़ार में लगाते हैं। ऐसे बाजारों में लोग रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ें खरीदने आते हैं।

साप्ताहिक बाज़ार में अधिकांश दुकानदार अपने परिवार वालों की मदद से काम करते हैं। साप्ताहिक बाज़ार में एक जैसे सामान बेचनेवालों की कई दुकानें होती हैं। इसलिए उन्हें आपस में कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है। कोई भी अपना सामान साप्ताहिक हाट में बेच सकता है। इस कारण हाट में बहुत-सी दुकानें लगती हैं।

यदि कोई विक्रेता अपनी वस्तु का अधिक दाम बोलता है, तो लोगों के पास यह विकल्प होता है कि वे दूसरी दुकानों से सामान खरीद लें। खरीददार के पास भी यह मौका है कि वह सामान का मोल-भाव करके कीमत कम करा सके। साप्ताहिक बाज़ार की विशेषता होती है कि यहाँ ज़्यादातर वस्तुएँ सस्ती एवं एक ही स्थान पर मिल जाती हैं। अलग-अलग सामानों के लिए अलग स्थानों पर जाने की ज़रूरत नहीं होती। स्थानीय लोगों को आस-पास के गाँवों के लोगों से भी मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

1. लोग साप्ताहिक बाज़ार जाना क्यों पसन्द करते हैं ?
2. साप्ताहिक बाज़ार में वस्तुएँ सस्ती क्यों होती हैं ?
3. मोल भाव कैसे और क्यों किया जाता है ? अपने अनुभव के आधार पर टोलियाँ बना कर नाटक करें।
4. साप्ताहिक बाज़ार में जाने का अनुभव लिखें।

?

WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

शहर में मोहल्ले की दुकान

एक दिन जूही एवं पूरन अपने घर के पास की किराना दुकान पर सामान खरीदने पहुँचे। वे लोग अक्सर खरीददारी के लिए यहीं आते हैं। दुकान में बहुत से ग्राहक पहले से ही सामान खरीद रहे थे। दुकानदार दो सहायकों एवं अपनी दो बेटियों की सहायता से दुकान चला रहा था। जब पूरन ओर जूही दुकान के अन्दर पहुँचे तो पूरन ने दुकान मालिक को सामानों की सूची लिखवा दी। दुकानदार सूची के अनुसार सहायकों को निर्देश देने लगा। जूही दुकान में रखे हुए वस्तुओं को देख रही थी। दुकान में अलग-अलग ब्रांड के साबुन, दंत मंजन, वाशिंग पाउडर, शैम्पू, केश तेल आदि रखे थे। अलग-अलग ब्रांड और रंगों के आकर्षक सामान जूही के मन को लुभा रहे थे। फर्श पर कुछ बोरे भी पड़े थे। सभी सामानों को तौलने और बाँधने में लगभग 30 मिनट लग गए। तब पूरन ने अपनी डायरी दुकानदार को दी। दुकानदार ने डायरी में सामानों का कुल मूल्य लिखकर वापस कर दिया। उसने अपने पीले वाले रजिस्टर में यही मूल्य लिखा। पूरन और जूही अपना झोला लेकर बाहर निकले। दुकानदार को पैसे माता-पिता के वेतन मिलने पर महीने के प्रथम सप्ताह में चुका दिए जाएगा

शहर के मोहल्ले में ऐसी बहुत सी दुकानें होती हैं, जो कई तरह की सेवाएँ और सामान उपलब्ध कराती हैं। इन दुकानों पर दूध, फल, सब्ज़ी, दाल, मसाले, खाद्य पदार्थ, स्टेशनरी, दवा जैसी वस्तुएँ मिलती हैं। ये दुकानें पक्की, स्थायी एवं प्रतिदिन खुलने वाली होती हैं। कुछ छोटे दुकानदार जैसे फलवाले, गाड़ी मेकेनिक, बिजली मिस्त्री, दर्जी की दुकान वगैरह फुटपाथ पर भी होते हैं

1. आपके घर के आस-पास व शहर के मोहल्ले की दुकानों का विवरण लिखें।
2. साप्ताहिक बाज़ार और इन दुकानों में क्या अन्तर है?
3. पूरन और जूही उस दुकान से ही सामान क्यों खरीदते हैं?

शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और मॉल

सुपर मॉल एक सात मंज़िला शॉपिंग कॉम्प्लेक्स है। विकास और रंजीता इसमें एस्केलेटर (बिजली से चलने वाली सीढ़ी) से ऊपर जाने और नीचे आने का आनन्द ले रहे थे। विकास एवं रंजीता को यहाँ एक साथ आइसक्रीम, बर्गर, पिज़्ज़ा आदि खाने के प्रसिद्ध रेस्टोरेन्ट, घरेलू उपयोग के सभी इलेक्ट्रॉनिक सामान, किराना वस्तुएँ, चमड़े के जूते, किताबें इत्यादि के साथ ही मल्टीप्लेक्स सिनेमाघर और ब्रांडेड कपड़ों की दुकानों को देखना अलग अनुभव प्रदान कर रहा था

मॉल के चौथे तल पर घूमते हुए वे दोनों ब्रांडेड आभूषणों, कपड़ों, जूतों को देखते हुए आगे बढ़ गए। एक तल पर सुरक्षा कर्मचारी ने उन्हें इस प्रकार देखा जैसे वह इन्हें रोकना

चाहता हो, या कुछ पूछना चाहता हो। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। विकास एवं रंजीता ने कुछ वस्तुओं पर लगी पर्चियों को देखा, ये ब्रांडेड होने के कारण उनको महँगी थीं। उनकी कीमत अन्य बाज़ारों की तुलना में कई गुना ज़्यादा थी। रंजीता ने विकास से कहा, "मैं तुम्हें स्थानीय बाज़ार से अच्छे किस्म का कपड़ा उचित दाम में दिला दूँगी।"

मॉल में आपको बड़ी बड़ी कंपनियों का ब्रांडेड सामान मिलता है। कुछ दुकानों में बिना ब्रांड का भी सामान रहता है। मीडिया एवं विज्ञापन में अपने पढ़ा या देखा कि ब्रांडेड सामान वह सामान है जिसे कंपनियाँ, बड़े बड़े विज्ञापन देकर और क्वालिटी के दावे करके बेचती हैं। ऐसी वस्तुओं को बेचने के लिये कंपनियाँ, उसे अपने विशेष शोरुम में रखती हैं। बिना ब्रांड वाले उत्पादों की तुलना में ब्रांडेड सामान की कीमत अधिक होती है।

1. कॉम्प्लेक्स व मॉल में लोग मोल-भाव नहीं करते है, क्यों ?
2. मॉल के दुकानदार और मोहल्ले के दुकानदार में क्या-क्या अंतर है ?
3. ब्रांडेड सामान किन कारणों से महँगा होता है?
4 दुकान या बाजार एक सार्वजनिक जगह है। शिक्षक के साथ चर्चा करें।

?

थोक बाज़ार

जो लोग वस्तुओं के उत्पादक और उपभोक्ता के बीच की कड़ी होते हैं उन्हें व्यापारी कहा जाता है। थोक व्यापारी अधिक मात्रा में वस्तुओं को खरीदता है। उन वस्तुओं को वे अपने

से छोटी पूँजी वाले व्यापारी को बेच देता है। यहाँ खरीददार एवं बेचने वाले दोनों व्यापारी ही होते हैं। इस प्रकार इसमें बाज़ार की कई कड़ियाँ जुड़ जाती हैं और सामान दूर-दूर तक आसानी से पहुँचता है। अन्त में ग्राहक को जो व्यापारी सामान बेचता है वह खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है। यह वह दुकानदार है, जो छोटे गाँव की दुकान, बड़े गाँव के बाज़ार, या शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में वस्तुओं को बेचता है। प्रत्येक शहर में थोक बाज़ार होता है। सामान सबसे पहले थोक बाज़ार में आता है, फिर अन्य खुदरा बिक्री करने वाली छोटी-बड़ी दुकानों तक पहुँचता है। इस प्रक्रिया को हम शहर के बड़े थोक व्यापारी जगनारायण के उदाहरण से समझेंगे।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

जगनारायण—एक मसाला व्यापारी

जगनारायण पटना सिटी के मारूफगंज का सबसे बड़ा मसाला व्यापारी है। वह अपनी दुकान 10 बजे सुबह शुरू करता है। आस पास और दूरदराज से व्यापारी यहाँ खरीदारी के लिए आते हैं। उसके यहाँ स्थानीय एवं राज्य के विभिन्न ज़िलों के अलावा देश के अन्य राज्यों से भी मसाला थोक के हिसाब से आता है। हल्दी बिहार के विभिन्न जिलों से, जीरा अन्य राज्यों से, काली मिर्च और लौंग मसाला दक्षिण भारत से आते हैं। सामान ट्रकों, मेटाडोर आदि से उसके गोदाम में पहुँचता है। वह अपना सामान छोटे व्यापारियों और फुटकर दुकानदारों को बेचता है।

बाज़ार ही बाज़ार

गाँव से लेकर शहर तक हमने अलग-अलग बाज़ारों को देखा। वहाँ पर ख़रीद-बिक्री की वस्तुओं,खरीददारों,दुकानदारों को भी समझा। एक तरफ गाँव में वस्तु के बदले वस्तु (वस्तु विनिमय प्रणाली) से खरीददारी तो दूसरी तरफ शहरों में फोन एवं इन्टरनेट के माध्यम से भी ख़रीद-बिक्री होती है।

ऐसे कई बाज़ार भी है जिनसे हम सीधे तौर पर नहीं जुड़े होते हैं। हमें इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं रहती। उदाहरण के लिए यदि हम मोटर साइकिल को लें तो हम इसे सम्पूर्ण रूप से तैयार ख़रीदते हैं लेकिन, वास्तव में इसका इंजन, गियरें, पेट्रोल टंकी, एक्सल, पहिए आदि सामान कम्पनी कई अन्य कारखानों से ख़रीदती है। यहाँ व्यापारी व कारखानों के बीच खरीदने-बेचने का काम चलता रहता है। ग्राहक के सामने वस्तुएँ तभी आती हैं जब ये पूरी तरह बन जाती हैं।

बाज़ार और समानता

इस पाठ में हमने कई तरह के बाज़ारों को देखा। बाज़ार लोगों को उत्पादन और बेचने का अवसर देता है। गाँव की छोटी दुकान, साप्ताहिक बाज़ार, मोहल्ले की दुकान से लेकर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स तक की दुकानों और व्यापारियों के साथ ही खरीददारों को भी देखा। इन दुकानों एवं दुकानदारों में बड़ा अन्तर है। एक बहुत ही छोटी पूँजी वाला बड़ी पूँजी वाले के साथ बाज़ार में व्यवसाय कर रहा है। इनके लाभ का स्तर भी भिन्न होता है। साप्ताहिक बाज़ार का व्यापारी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के दुकानदार की तुलना में बहुत कम लाभ कमाते हैं। बाज़ार के

विभिन्न रूप देखने पर आपने समझा कि बाज़ार में सबको बराबर लाभ नहीं मिलता। खरीददार भी लगभग इसी स्थिति में होता है। एक तरफ जहाँ कुछ लोग खरीददारी व ज़रूरत की भी कम चीज़ें खरीद पाते हैं वहीं दूसरी तरफ कुछ लोग मॉल में बेहिचक खरीददारी करते हैं। लोगों की आर्थिक स्थिति ही उनके क्रय शक्ति को तय करती है।

अभ्यास

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

1. इस पाठ एवं अपने अनुभव के आधार पर इन दुकानों की तुलना करें और निम्नांकित खाली जगहों को भरें।

बाज़ार	क्या सामान मिलता है	कीमत	दुकानदार	खरीदार
गाँव की दुकान				
हाट				
शहर की दुकान				
शॉपिंग कॉम्प्लेक्स				

2. बाज़ार क्या है ? यह कितने प्रकार का होता है?

3. ग्राहक सभी बाज़ारों में समान रूप से खरीददारी क्यों नहीं कर पाते?

4. बाज़ार में कुछ छोटे दुकानदारों से बातचीत करके उनके काम और आर्थिक स्थिति के बारे में लिखें।

5. बाज़ार को समझने के लिए अपने माता-पिता के साथ आपके आस-पास के बाज़ारों का परिभ्रमण करके संक्षिप्त लेख लिखिए।

६. आप भी बाज़ार जाते होंगे। अपने अनुभव के आधार पर इस तालिका को भरें।

	आपने क्या खरीदा?	कहाँ से खरीदा? (हाट, मोहल्ले की दुकान से)	उस दुकान या बाज़ार से क्यों खरीदा? (सुविधा, भाव, विभिन्नता, उधार, गुणवत्ता)
1			
2			
3			
4			
5			

7 किसी साप्ताहिक बाज़ार में दुकान लगाने वालों से बातचीत करके अनुभव लिखें कि उन्होंने यह काम कब और कैसे शुरू किया? पैसों की व्यवस्था कैसे की? कहाँ-कहाँ दुकान लगाता या लगाती हैं? सामान कहाँ से खरीदता या खरीदती है?

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED